

वृद्ध पीपल

विनोदचन्द्र पाण्डेय



राजकमल प्रकाशन

नयी दिल्ली पटना

मूल्य रु 30 00

— विनोदचन्द्र पाण्डेय

पहला संस्करण 1985

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्रा लि ,

8, नेताजी सुभाष भाग, नयी दिल्ली 110002

मुद्रक रुचिका प्रिण्टर्स,

नवीन शाहदरा दिल्ली 110032

आवरण चमल

VRIDDH PEEPAL

Poems by Vinod Chandra Pandeya

सतीश और बमला को
सस्नेह

क्रम

मुख्य मुख्य सहज	भाग में पूर्णमा	
आत्मा बाते	11	मिला 33
मात्रीगर	12	प्रतीक्षा 34
गूरज	13	शृंगार 35
गवत्प	14	तान 36
पेड़ दवता	15	मपुर 37
जय हनुमा	16	गुग 38
तापरयाहा	17	आधी रात 39
विन्याग	18	प्रेम की मज्जों 40
आनंद बीज	19	चतुर्नरिचर्तन 41
मूर्तिपन हृदय	20	वीणा का अंग 42
गूरज (2)	21	यदर 43
यहाँ	22	स्त्री 44
पुनव	23	प्रेम और भाग 45
मन्दादरी-विवाह	24	साती हाथ प्रेम 46
कृष्ण-निमन्त्रण	25	दासी-दविमौ 47
कृष्ण-जन्म	26	चुम्बा 47
आस्थाएँ	27	ताडका 47
राज पाना	28	थोड़ी-सी बही 48
सजाना	29	घटा मनान 49
मुख्य-मुख्य	30	देसी 50
आनंद की धारा	31	

घट पीपल		भूराष्ट	81
वृक्षारमा	51	विभागाध्यक्ष	81
सेनापति-नवि	52		
घटनाहीन	53	रम्याम	
मस्त	54	गुब्ब	83
शांत मन	55	बमन्न	84
दगरथ	56	जमने और मनावा	85
भन्न मस्तक	57	गुम गोवन	86
साराग	58	कुछ बात थी	87
साधन।	59	एक मच	88
एक वन	60	बहुत का चक्कर	89
फूल सरीसा	61	घर बगाया	90
मेरा भाग्य	62	बदनामी	91
समपण	63	तीवा	92
आहुण अध्ययमाय	64	नरद	93
सूक्ष्म की उन्न	65	हृदय का बटुआ	94
साधना	66	यह मन	
		यह मन	95
गंगा का अंत		दरार	96
समाज	69	रददी	97
गंगा का अंत	70	रूपहीन	98
पैसे का चक्कर	71	सप रस्ती	99
पिता	71	योगी लगते	100
विपणन विशेषज्ञ	72	बसवर	101
कूटनीति	73	तियव	102
असुर	74	चुहिया	103
भारी और बंद	75	नशस	104
भारतीय	76	अवलपित	105
दो सीढियाँ	77	घोषा वसंत	106
भानजा	78	छुट्टी हो	107
नवली सचय	78	छह अघे	108
युजुआ	79	पचास (तीन)	109
आग बढो	80	हप पायेय	110

मन (तीन)	111	वधिया का अन्त	129
निर्जीव	112	निष्पप	130
मुफ्तिसल और विदेश		स्वर्ग की मुसीबत	131
		बेचारा यम	132
अजमेर	113	बीज	133
विश्वनगढ़	114	बादा	134
मोटा के जुनाह	115	मूल	135
गरमी	116	नयी दिल्ली	136
जेनीवा कुछ चित्र	117	हितोपदेश	137
ध्यानबद्ध पद	118	हाइकू	139
नारंगी चन्द्रमा	119	मुट्ठी	140
अजमेर से विदा	120	नमस्कीन	141
		चाणक्य नीति	142
माँ का खोना		श्री लाभ	143
वापिसी श्राद्ध परचात	121		
आखिरी दिवस	122	भानु का दृष्टिकोण	
अन्त	123	शक्त-मोक्षाय	145
मा	124	दाल-रोटी-सब्जी	146
माँ का श्राद्ध	125	बडवा	147
		कपा	148
रथान्तर		बादून्स	149
समाधि लेख (3)	127	पत्थर	150
चेतावनी	128	रात्रि प्रायना	151

आत्मा बोले

जहाँ आत्मा बोले
वही बसना
गहरी शान्ति प्रतीत हो
सहज फैले

कुछ भी नहीं आसपास
मैं देखता सिफ नौलाकाश
न बिजली कड़वी
न बादल बरसा
भीगी द्रुत मन की धरती

बाजीगर

एक से दो
दो से चार
बाजीगर समय चाहता
यह लोभी हृदय

जो कबूतर
हाथ में पदा होगा
कहीं कमाया खिलाया
झोली में होता

चार से दो
दो से एक
मेरे मन से भीड़ हटा

सूरज

आ गया सूरज

अधक प्रकाशवान

निराशा नहीं जानता

जीवन वान

कुछ प्रारम्भ होना चाहता

बीसमय समय

मुझसे गहराई में

मेरा अपरिचित हृदय

यह द्रुत समय आता

और बीत जाता

कुछ सुलथा अपूर्व

हय जसा बढा

सकल्प

मैंने उतार दिये हैं
अपने सिर से
यह हो जाय
बह न हो
इन चिताओं के बोझ

जो देगा
झेल लेंगे उस दिन
बस निभाना है पूरे जोर से
तुम्हारी ओर बढ़ने का प्रण

•

पेड़ देवमा

मैं भी जन्म लेता

किसी घम धरती पर

तुम्हारी जसी जड़ें

ओ पेड़ देवता

जाये आये दुःख सुख

बढ़े या घटे पूछ

धी और गई कोनिला

मैं दृढ़ रहता

जय हनुमान

जय हनुमान छुट्टी हुई
उत्तरदायित्व फक्ता उठा उठा
स्त्री जजाल भ बहुत फसा
कम द सका नम मिला
नरोत्तम होने का भार उतरा
फिर बालसुंदर है घरा

सापरवाही

जब तक मैं न जीत लूँ

जीत-हार के बीच सापरवाही

अनिश्चय में रहे

मेरे भाग्य की बाजी

विश्वास

भर कमरे के बाहर
जो अस्त 'यस्त बाग है
उसमें कितनी प्रतीक्षा
और जात्मविश्वास है
विश्व में असम्भ्य बन जाना
वस नहीं भूलेगा

आनन्द बीज

सुबह जो आनन्द बीज मिला
शांति जितनी उगा पाया
उसी से पार करना है
दिन-भर

मूर्तिवत हृदय

निमन किससे क्या कहा

अटवल लगाना छोडा

मरे वार म कोई

गाला या न वाला

एक मन्दिर म बैठा हू

यह मूर्तिवत हृदय

किसी दिन बातचीत शुरू करेगा

जो आवरण जीवन-भर बुना

धीरे धीरे उघडेगा

सूरज (2)

एक थकाई मिटाते हा
बुछ अपना-सा धनाने की मीस
सुनहला मुकुट पहन
सूरज राजा

घाटियो बे धुएँ मे बन्द
हमारे गावो तब
चन्द्रवशी स्त्रियाँ
सूर्यवशी पुरुष मन

सबको छूता सुनहला सवार
धन या धनाढ्य होने जैसा
समथ मन करते हा

अकेले हो सूरज
अकेलापन छूते हा
मुगल की नही
एक की पूणता दते हो
सूर्य आशीर्वाद

यहाँ

उतार दो हृदय से
महत्वाकांक्षा
छोड़ दा घोड़े का चरने

तुम जिसे मानते सब कुछ
यहाँ वह कुछ भी नहीं है

स्वास्थ्य शान्ति मुक्ति
हरियाली-बादल-हवा
इनको हृदय पर पड़ने दो

पुलक

(1)

किसी ने सुगन्ध पायी

किसी ने चला

किसी को कुछ दीखा

या छू गया

यह सबकुछ नहीं

रामनाम की सरिता में

स्नान करना है

हृदयभर

(2)

कितने वर्ष बीत जाते

सुखी भी दुखी भी

साथ-साथ और एकाकी

यह पुलक हृदय नहीं

मन्दोदरी-विवाह

ढोल पीटत अलाटे

गुजरते सड़क स

मन्दोदरी का

रावण से विवाह है

शिशिर के राक्षस

मुख फाट चिंघाटते

सा गया ऊष्मा सब

अब व्यथ बटवटात

कृष्ण-निमन्त्रण

श्याम बादलावाला आकाश

फैले कृष्ण वेश

धुरू होती रुकती बरसात

मन गम्भीर और उल्लसित करता

आज ध्यान में पूरी न रहेगी बात

होगा कृष्ण-साक्षात्कार

सब गुरुओं की आज कृपा है

हृद में भीगते रहे वृक्ष दबता

मन में फटनेवाली तबिल

आकाश में है कृष्ण-निमन्त्रण

कृष्ण-जन्म

मुरय तो असुर अह का
मनजीवन पर राज ह
माय धरानेवाला के बीच
कोई हा वशी बजान सगा

दूर ग्राम प्रदेश मे
नीली तमयता बढती
सहज की मोहनी पा
गोपियाँ रास करती

घन और जार से बसे ही
चलता है मुख्य जीवन
क्याएँ हैं कल्पनाएँ हैं आगे
राज्य का अधिग्रहण

भास्याएँ

1

विशाल वृद्ध पीपल
सिखला देगा
मुझ वाले बँल को भी—

2

सुन्दर सुडौल आकषक
तो हिरन भी होते हैं
रईस
हलवाई भी

शब्द पाना

मन के पीछे स आया
शब्द हलक म पाया
प्रेम की शांत शैली थी

चटक सटीक सुभाषित
मन प्रसन्न करत
पर कविता गम्भीरता है
हृदय म कुछ असली
हाना पड़ता

बादल ताकना हृदयाकाश म
पानी की प्रतीक्षा
सूखे कुएँ म

खजाना

एक खजाना है

हृदय के नीचे गढ़ा

मुझे विश्वास है पूरा

अभाव से पीड़ित

मैं जा होता हूँ खड़ा

ठीक उसी स्थान पर

मेरा मन रईस हो जाता

जैसे वह खजाना पा

जो मुझमें है और मेरा

कभी न हुआ

सुबह सुबह

सुबह-सुबह
नगर पर रहता भोलापन

वक्ष वनस्पति-धास
के बीच उगे
सगते घर सड़क स्कूल बंद दुकान

वाग के गुलाब
सजीव अभी
फूल हो जायेंगे

बचपन के मन मे
भीड़ कम थी
दीलता था यह विश्व
कोई कहानी नहीं थी
पर मन लगा रहता था

आनन्द की धारा

क्या बैठे हो स्वाय निमग्न
इससे बचने और उसको पाने
आज सुबह भी आनन्द की धारा
वही निकट थी और बह गयी

मिलन

क्या मुख होगा उसका
प्रेम-साधना से पाया
हम कहीं मिलेंगे पहली बार

—किसी नदी के तीर

लिखा है तेरा-मेरा

मिलन सस्कार

अतः ससार और अहं

मुझे पहचान लोये तुम

लफडियों के ढेर पर लेटे

अग्नि शिक्षा उठने के क्षण

प्रतीक्षा

(1)

पीपल की पत्तियां म रानबनीं
वही ऊँचे पर बार्द हया है
जा मुझे नहीं छूनी

(2)

दाना आर रम है
मही विगम
वही महज है

(3)

बजा-बजा
जार स गुरही
आज उसनी प्रीति
मुझे मिलनवानी

(4)

अकेल रहनवाले के लिए
एक लाल सायकल
मन की जटें
हिला जाता

श्रृ गार

पूरा श्रृगार किया

सब जेवर पहिने

जितने प्रसन्न होते तुम

मुझे देख

कोई नहीं हुआ

तत्र

श्री गम्माहिनी माता

जो पाप ने गये

उस दूर मुकाम

उह वाटना मिला

मुझे चाहिए उसका

झुका माया

मेरे छलबल से दे

और मैं न अपनी मर्जी से दिया

हृत्प और रक्त हृदय का

मधुर

मधुर थे पास

मधुर है दूरी

मधुर था साथ

मधुर है स्मृति

मधुर व्यापार

मधुर ऋण

बसूली लेना

देना मधुर

प्राथ निराशा

मधुर रहता

नक्ली माना

मधुर हँसता

जहाँ हृदय था

अडियल कड़वा

वहाँ मधुर है

पनावित बहता

प्रेम की मर्जो

निश्छल हुए बिना
रही मिलना
उपवन में फूल बीनता प्रेम

दलदल से निकल आना
जरूरी है पर काफी नहीं
क्योंकि प्रेम की अपनी मर्जो है

ऋतु-परिवर्तन

सिसिर प्रारम्भ फसाद
स्मृतियों की रेत में खोजना सोना
किसी प्रेम जसे तत्व का

यह रोग फा काटा
हृदय में चुभा हुआ
ऋतु-परिवर्तन पर
फिर बसक उठता

वीणा रा मग

तुमग मिलाता

गगा नहाता

सब मट जात दुख

जम-जमातर ब

मेरे सौभाग्यो मे

इतनी पैंग नही

तुम्हारे स्वग तब

पहुँच जाते

बजत रह तबल और मृदंग

बजा ही नही वीणा का अंग

इतना ही जुटा सगीत का ठाठ

जीवन समारोह हाता है मग

बन्दर

बाले मुह बन्दर
धूप भ बैठे
जु निकलवा रहे हैं
पलियो से

यह मही लगता
बोल नहीं सवत
अब चुप है जैसे
बोल चुके है

सेटे - बैठे
इतने आराम से
श्रुति प्राप्त
तैरते

यह अलस-तमस
हमने साथ जाना था
जाबो के दिनों का
धूप की छुट्टी में बीतना।

बन्दर दिन गया
बना अकेला मानव

स्त्री

स्त्री एन खादय सामग्री रही
अनुपम सुगन्धित
बद बमरो भ केलि
ऐदवय पहिनाती
एन और विजय
पौरुष व भाग्य से मिली
अह बधक उदार करती

नविया का कहना है
मन्त्रवान यह जाति
सम्पन्न से मिलती सिद्धि
हृदय म रस निज़र भुल जाता
टूट जाती मन की निविड रानि
सूअम आकाश आलापित होता
दस कृपा की न दृष्ट अनुभूति

प्रेम और मोग

यह धीरे है

वह जल्दी

यह स्वाद लेकर खाना

यह निगलना

यह सुरा है

वह पट भरना

यह मित्रता

वह जीतना

यह सग म सुख है

वह दुख में निबटना

यह पूवराग

वह सुरत

नही नही नही

तुम समझे ही नही

खाली हाथ प्रेम

हमें चाहिए सफलता

भोग सुरक्षा

सूखे खाली हाथ प्रेम

भला आदमी है

जरा फिट नहीं होता

दासी देवियाँ

दासियाँ देह की सेवा स
मनोगामना सिद्ध करनी है
द्विषाँ मन म पूणवाम हू
देह अपण भरती है

चुम्बन

चुम्बन से घुँटल
नही बदलेगी
राजकुमार समझता अपने को
पहिचानगा पिशाचयोनि अपनी

ताड़का

भलाई के यज्ञ उजाड़नेवाली
अवधित फिरती ताड़काएँ
राम-सीता मिलन पूणवाम
स्थगित है इसलिए

थोड़ी-सी झड़ी

धूल की हवा

थोड़ी-सी झड़ी

दुबारा चाहा मन

फँसल की फाइलें फेंक देने

कुछ नया जाहने

प्रेम जैसा बही

मुँह पर लिखा फँसला

लिखात रहगा कैमले

जीवन की इच्छा सौटेगी

पर कुछ ढेर म मुजरेगी

धूल की हवा

थोड़ा-सी झड़ी

बड़ा मकान

मन व्यस्त है

तुम्हें घटाता इधर-उधर

जीवन रोवती कमी

कम हा ज़िम्मे

क्या भरा हृदय

कभी बड़ा मकान होगा

बाई रह सके साथ

बिना असाति बढ़ाये

बेसी

मेरी सम्प्रति है

चलगा

यह प्लास्टिक

टूटेगा नहीं

खिंचेगा

फँसा नहीं जायेगा

पछा रहगा

गाजा गया

मिस जायेगा

वृद्ध पीपल

बृक्षारमा

पिछले जन्म में बायद

मैं ऐसा वृक्ष था

मन मिलते ही हैं

मिल्ली, कुत्ते, भेड़, तोते जैसे —

मरा मन है

ऊँचा स्थिर वृक्ष जाति था

शहर में जीवन घाटता

ऊँचे बड़े पेड़ों का देख

इतनी स्वस्ति होती है

वृद्ध पीपल में पत्त नीम

मित्रों से बातचीत होती हो जैसे

मन हल्का होता

गुजर जाता समय सहज

/

सेनापति कवि

बाहर के लिए सेनापति
अपने लिए कवि
दहता और अग्नि
मर लिए नहीं
हवा या सजलता

मरे लिए नहीं
बगल भरे धीम दिवस
जीवन मुह्यत एकाकी
जिम तिन घुग समाप्त हागी
जीवन दच्छा भी
बुझ चुकगी

बया मैन पहिचानी
अपन स्वभाव का मून रसाश्रुति
कुछ करना चाहता
कुछ बबिता निस्ताना

घटनाहीन

चिन्ताहीनता थी और समय
मन को परखन और समयन
भागवत सिखा क द्वारा

पद प्रभुत्व या रसमी सुख
नहीं थे ता क्या
यह जो मिल रहा है राज
देख सकना

सुवह का आना
कुछ देर हल्की होती
मन की भी कालिमा

जब बनेगी कभी सूची
क्या पाया जीवन म इसकी
यह घटनाहीन अकेले दिवस
गिने जायेंगे बहुत

सेनापति-कवि

बाहर के लिए सेनापति
अपने लिए कवि
दड़ता और अग्नि
मेरे लिए नहीं
हवा या सजलता

मेरे लिए नहीं
बगल भर धीमे दिवस
जीवन मुम्यत एकाकी
जिस दिन धुआँ समाप्त हागी
जीवन इच्छा भी
बुझ चुकेगी

क्या मैं पहिचानी
अपने स्वभाव की मूल रेखावृत्ति
बुझ करना चाहना
बुझ कविता लिखना

घटनाहीन

चिन्ताहीनता थी और समय
मन को परखने और समझने
भागवत शिक्षा के द्वारा

पद प्रभुत्व या रेशमी मुल्ल
नहीं थे ता क्या
यह जो मिल रहा है राज
देख सकना

सुबह का आना
कुछ देर हल्की होती
मन की भी बालिमा

जब दतेगी कभी सूखी
क्या पाया जीवन में इसकी
यह घटनाहीन अकेले दिवस
गिने जायेंगे बहुत

मस्त

पैर फलाये पटना पुस्तक
खाना पीना सोना
अपन घर के बिल म रहना

जब सुखी थे नींद गहरी म की
दुख आये उजड़ गय

शान्त मन

आज मन शान्त हुआ मेरा
उमड़ते-धुमड़ते

सम्भव असम्भव

गिरे अपनी-अपनी जगह पर

बस तब चमकती स्त्रियो से
कुछ कहने को नहीं बचा
मन से उतर गया

फोन नम्बर

जीवन की बिताएँ

जुट आयी

और मन लग गया

दशरथ

कवेयी ढग
अनुराग ससार न
पन्ड रमे मेर प्रण
श्माम क्षात के लिए
मांगते बनवास

मैं जो देना चाहता
अपना राज्य
बिसी भँडल
परदश गये
गुणना बढ़ाते अधिकार

निभान हगि प्रण
और प्राण जायेंगे

भग्न मस्तक

यदि भग्न मस्तक मिले
मरी देह किसी सवेरे
यही साधना क्षमा करते
खला गया विनोद
जो राह मिली

गम्भीर लेन-देन कहाँ नहीं थी
चुम्बन से अल्प सम्बन्ध
कुछ खरब ये
न धूप पहले थी
न अब अंधेरा हुआ

“मेरा सब सच जाननेवाले मित्र
तुमसे भी मैं कह गया कुछ झूठ
झूठ-सच परखने के अनुभव से
मुझे सही कर लेना’

सारांश

बोई नहीं हुआ भर लिए
मुझसे प्रथम

अपना भरण-पोषण
अपनी शिक्षा दीक्षा
अपनी सफलता की चिंता
ले गयी पूरा जीवन

जितना अन्न कमाया
स्त्री, पुत्र, पुत्री का भाग
मैंने स्वयं खाया

मिलते हैं चारो तरफ
देखटखे अहवाल
बड़े शब्दों में कुशलता
दुद्र हृदय

भलाई
यह नयी सुदरता
अंतिम वर्षों में जानी

साधना

यह ता सच है
ख्याति नहीं मिली
न प्रशंसा हुई
न अब होगी

फिर भी लिखते रहे
थी मजबूरी
अपने को पाने
यही साधना थी मरी

उदासी से लड़ते रहना
परानम था
प्रेम चमके कभी-नभी
जीवन बीता एकाकी

एक कर्ण

जा वक्ष और बाहुआ म
जडा था अभिमान का वक्च
बहु ता ले लिया
युद्ध ने पूव

प्रशसा से बढता था ओज
ले लिय वण-कुण्डल
दिया सारथी शल्य

सूय-पुत्र सिंह लग्न
आ गया पराजय का दिवस
श्रगालो का बढता शोर
क्षितिज पर

फल सरीखा

जसली उड़ गया

नाटव बचे

प्रम का शौव, फिर भी

सूखे हृदय को ढके

कुछ सोदम

जीवन म ला सकता

फूल सरीखा दीखता

यह सुख के लोभ का बीडा

मेरा भाग्य

जो चाहा बहुत

मिला नहीं बिलकुल

जो चाहा थोड़ा

मिल गया पूरा का पूरा

जब सुख निधि थी मेरे पास

मेरे हाल थे फटेहाल

आज बाहर है सब ठीक

भीतर मुख्यतः मत

समर्पण

मैं नहीं हो सकता

वह—जिम्मेदार समथ व्यक्ति

जो परिवार का भार

सजग ढंग से निभाता

अपना मिछात है जल्दी-से-जल्दी

पा लेना सम्पूर्ण बेफ़ित्री

जिसने आज पार करा दिया

कागज की नाव में

उसी की मर्जी पर है आगे

वहाँ कैसे जियेंगे

बुढ़ापे में

मेरा भाग्य

जो चाहा बहुत
मिला नहीं बिलकुल
जो चाहा थोड़ा
मिल गया पूरा का पूरा

जब सुख निधि थी मेरे पास
मेरे हाथ थे फटेहाल
आज बाहर है सब ठीक
भीतर मुख्यतः मत

सूक्ष्म की उम्र

जिस भाग्य से पचास वष बीते
उमी ११ माठ कुछ निखर सके
बया साबना

जाज उतरनेवाणी है
आवाश से नयी सीढी
भूलो युगल सुख
मिले या न मिले
अकेले अनुभव के दिन ह मेरे

एक हरा तोता बढबडाता
हरे नीम सिखर पर उतरता
चश्मा हटाकर देखो
कोई सूदम क्या
सुबह-सुबह चनी है

ब्राह्मण अध्यवसाय

ऐश्वर्य का विचार
मनते ही
ओ शुद्धि ।
छेद है ना

दिन नहीं जायेंगे
हाथी पर चढ़े
जीवन सुखी बीतेगा
यदि ब्राह्मण अध्यवसाय में बीते

पढ़ना-लिखना
गठना कथा
या कभी दक्षिणी बयार की तरफ
मन की खिडकी पर
प्रस्तुत होना कविता का

सूक्ष्म की उम्र

जिस भाग्य से पचास वर्ष बीते
उगी का माठ कुछ निखर सवे
बया सोचना

आज उतरनवाली है
आकाश से नयी सीढ़ी
भूलो युगल सुख
मिले या न मिले
अकेले अनुभव के दिन हैं मरे

एक हरा तोता झड़काता
हरे नीम शिखर पर उतरता
चदमा हटाकर देखो
कोई सूक्ष्म कथा
सुबह-सुबह चली है

सापना

इस आलोचना में मत पड़ो
यह दिवस काई और दिवस हाता
दूसरा देश—समद काल

यही इसी मिले दिवस से चलो
कितनी शांति उपजायी मन में
क्या प्रफुल्लता की पूजी पायी

सम्ब पहर जूझना है
आय विपरीत अह
मन के तमस
प्रतिकूल घटनाओं से

सब-कुछ छिन जाय
अपने पर राज्य रहे
मन की समता

दने में दत्तचित्त
मांगने से मुक्त रहूँ
उदामी खालीपन से
स्वयं ही युद्ध वरूँ

सन्ध्या तक यश लाभ यश हानि
पाया जो पा न सका
अपने से अलग नर दू
फिर मत खाल सहज हो
फिर समाधि में बैठू

समाज

तूटने में लग

भयभीत, अपन या परिवार के लिए

उसी तालाब से जीना है

जिसे आज भरसक गंदा करते

गंगा का अन्त

1

गंगा भ गिर रहा गू
चिन्ताओं से खींच
आधे-जले मुरद
गंगा हुई अपवित्र
बानपुर के नीचे
प्रयाग भ खतरा बढ़ा
बाशी बलुपित हुई

गंगाजल पीकर
लाग मरने लगेंगे
गहरा की गदगी से
नदी हुई दुग्धित
जलधारा रोज क्षीण
गटर रोज बढ़ा
पाप बहानेवाली धारा—
आखिर दे मारा

2

भारतीय सब जगह धूकता है
जगह-अजगह मूतता है
दूषित करने में
प्रथम पिशाच
गंगा को लगा ही दिया काम से

पैसे का चक्कर

सबसे बड़ा हूँ छीननेवाला

पैसे का डर

कोई ले गया

या नहीं पाया

वही अटका

बम कमाया

दे दिया धेकार

खो गया

बाप र बाप !

मन को मार देता है

कोई ठिठाना नहीं छाड़ता

मह पैसों का चक्कर

पिता

हमारे पिता धीरे धीरे कुँद हा रहे

लकड़ी का भाग उनमें बढ रहा

आखें अभी जाग्रत हैं चौकन्नी

चेहरा कोई पता नहीं द रहा

एक ही प्रश्न है इस कम्प्यूटर में

वहाँ रुपये में बन रही चक्की

विपणन विशेषज्ञ

अपने को सप्ता वचना
एक विपणन-नीति
बमबस्ता मुख रखना
ठीक कपड़े
तुरत ट्रिक्स पर बुलाना
पाटिया की श्याति

मुझ चाहिए
विपणन विशेषज्ञ
बाहर दाम बढ़े
और भीतर भूख न गिरे
रईसा पर सिक्का चल
गरीबा का पक्ष रह
जीत नयी-नयी
मे रहूँ वही

कूटनीति

जीवन है कूटनीति
जा चाहो उसे छिपाओ
बात चलती रहे
और कुछ न हो
भीन थकता है पहले
जीतो नहीं तो
जिश्च बढ़ाओ
या थोड़ा मा हार
राजी मिलेगी अगली बार

कुछ मिल जाय
इस चीमनी चाल से
पर घटिया बनाते तुम्हें
ऐसे सौद

असुर

मैं हूँ महानीच
मैं हूँ सुपरअसुर
राक्षस पाते हूँ आजकल
दिल्ली में अप्सराएँ
लूट छोड़ो तो
छूट जाता पाना
धमकी से होते काम
सटके रहते अयथा
सात्विक बुद्धि बेकार
धक्का धमकी चलती
विभीषण पिटे बठे हैं
दिल्ली लूटा है रावण की

भारी और बन्द

विषयासक्ति लाती भारीपा
व्यक्ति हो जाते बन्द
पालिश के डिब्बे जैसे
उनमें भीतर नहीं दीखता
घोबन्ने हथर-उधर देखते

भयभीत है भारी और बन्द
जो कुछ भी नहीं देता
अपने मन का अता पता
बस ठस्स बैठा रहता
भीके का चूहा चाकता

भयभीत भय छिपाये
भयावह लगता

भारतीय

हमारा विश्वास है
इस पर मर मिट सगते
घोड़े से जीवन भर सकता

सहस्र हाथ से लूटनेवाला
सौ मुखा से खानेवाला
तो अधम राक्षस होता

साचे हैं उपनिषद
पेड़ा के नीचे बसर कर
नदी के स्नान में लगा है
सब पाप धुल गया

दो सीढियाँ

दो सीढियाँ हैं

—अपने धर्म से चढ़नेवाली

—घापलूसी से बढनेवाली

पहली है सीधी और कठिन

वाँस की चीख सवत्र मिलती

दूसरी है लिपट

घक्कम घुक्का भीड़ इसमे रहती

भानजा

मेरा व्यगचित्र सामने है—
बातूनी असम्य भानजा
हर बात पर अपनी बात अड़ाता
काम में जुटने से कतराता
हे भगवान क्या मैं ऐसा
आत्मविश्वासहीन ग्राम्य भोपू था—

नकली सचय

मेरी जीवन वस्तु थी
शिल्प की ठोक पर विसरनेवाली
सत्य की कीमत से कतरा
नवली जोड़नेवाली, बहुत मारा

बुर्जुआ

सब मानते अपने को

—निष्पट

—हा, अतिकामी

—सम्बन्धों की लेने-देने में

उठायी है बहुत हानि

स्पष्ट ऐश्वर्य में जीते

और अप्रकट वेदना से पीड़ित

सारे सुख का सुख

सारे दुख की सहानुभूति चाहते

भाग्य बढो

घुछ गुरु मारा—ढाल पीटा
जीर ममय पर निबन्धो

उठते चक्र से
उठते चक्र पर कूदो
दूसरे
हार और दुख की
छून से बचो
इनम जटके
लोगा से—बढो

दफतर की ऊँची
ढालियो पर बैठे
इस मत के अनुयायी
सहमी के बाहुन सब

इयूरोक्रेट

इन चुनाव-परिणामों से

सरकार को सीखना चाहिए कुछ ?

क्या-कुछ

मिस्टर हित प्रकाश

पद्मनाभन को हटा

आपको सरकारकी देना तुरत ।

विभागाध्यक्ष

हर बात पर लगाते हैं

—जैसी जाना थी आपकी

किस खूबसूरती से मिलाते हैं

चापलूसी और मुस्तैदी



सुबह

उठी—सुबह ने फेंका पत्थर
रात्रि के वटवक्ष पर
तारों का झुण्ड उड़ पड़ा
पूव के अहरी ने पकड़ा
प्रकाश के फन्दे में
राज महल का शिखर

वसन्त

चलो भर दो प्याला
वसन्त की होली में—फेंव दो
पश्चाताप का क्षिशिर लबादा

समय की चिड़िया को
थोड़ी दूर ही जाना
और वह पल चुकी
पक्ष फैला

जमशेद और कैकोबाद

सुबह हज़ार फूल खिले
और हज़ार धूल में मिले
जो ऋतु लाती है गुलाब
जमशेद और कैकोबाद
उसी में उठे

गुम कोयल

वसन्त गुम हुआ गुलाब के साथ
गुवावस्था का मधुर इतिहास
हो गया समाप्त
शाखाओं में गानेवासी कोयल
बब कियर उड़ गयी
कौन जाने

कुछ बात थी

एक द्वार था

जहाँ नहीं मिली

एक परदा

जिसके पार न दीखा

कुछ बात थी तेरी-मेरी

कुछ लगा—

फिर मिट गयी अनुभूति

एक सच

चलो बढ खम्बाम के साथ—

झानिया को छोड बहस करते—

एक बात सय है

जीवन फिसलता हमस

और कुछ हो न हूँ

इतना सच है

फूल एक बार खिला

बिखरता है सदा के लिए



बहस का चक्कर

मैं भी जब युवा था
पण्डित और साधुओं का सत्संग करता
और उसने बारे में बहस
के चक्कर में पड़ता
पर सदा लौटा
उसी द्वार से जिससे घुसा

घर बसाया

कितने दिनों से चल रही है
मेरे घर में

नये विवाह की मस्ती
अगूर की बेटी से घर बसाया है
तलाक़ दी बाइ बुद्धि

बदनामी

कविता के लिए बदनामी मोल ली
इज्जत मैंने प्यालो में डुबा दी
जिस बुतपरस्ती से जिया बहुत दिन
जमाने की नज़रो में उसने
मेरी साख लुटा दी

तौबा

माना तौबा की है कई बार
पर फिर लौटा है वसन्त
हाथ में गुलाब लिये
मेरे पश्चाताप के चिथड़े उड़ाते

क्या मैं होश में था

जब उठायी थी तौबा

नकद

दुनियावी दबदबे मानते कोई
आनेवाला स्वर्ग अ'य

दूर के डोल सुहावने साथी
नकद लेकर छोड़ दे बाकी

हृदय का बटुआ

1

गुलाबी की खिलखिलाती धज
दुनिया में उतरने की देख
खोलकर मेरे
हृदय के बटुए का तागा
बिखरा दो बाग में

यह मन

यह मन

मन जो प्रयासा से फूलता
जो अस्वीकृति में फूटता
इस धुलधुले से क्या जीना

अहकारी बातों का
सिलसिला असम्य
अपने श्रवण से
विश्वास अधूरा रहता
मैं तुम्हें पकड़कर कहता जाता

कुछ सगीन बने शाक्त हैं
कुछ सक्त—रक्त के नाचते वैष्णव
काले घन का भोला शिव
क्षुद्र लोगो को सिद्धियाँ दिये

वहाँ आनन्द
वहाँ सरल आनन्द इस में

धरार

दुख ऊपर से पड़ा था
उठ जायेगा ऊपर से
हृदय की धरती फटी
जानकर अपनी

रब्बी

क्या मैं टटोलू अपना मन
कारखाना रही का
बिगड़ी अधूरी बात का
इसमें कुछ नहीं
फिर जा देखने लायक
मालखाना अपराधी का

जा पहली बोली मिले
उसमें बेचने लायक
एक हरिनाम पर निछावर
सब कुछ मेरे भीतर

रूपहीन

किस कोण से सुंदर ?
अप्रिय गवाही दता मुकुर
आज पलट लिये सब सफे
इस किताब में कुछ नहीं रोचक

चट्टान घिसी अनुभव से
कोई रूप नहीं उभरा

सप-रस्ती

सह लेते दुनियावी लोग
इसलिए सहने को क्या गिनना
जब अक्सर आता
यह मरी दीखती सुख प्रवृत्ति
सप बन जाती रस्ती

योगी लगते

पत्तियाँ उतर गयीं

योगी से लगते पेड़

जीवन भी एक दिन

खाली लगा था ऐसे ही

मन में निक्ली गहरी

वागनाओ की जड़ें

बेखबर

यही हानि हो रही है
 मैं हूँ बेखबर
यही जीने में मग्न
 बना जड़भक्ति
जेल को तोड़ने
 उपाय नहीं करता
आवश बन्दी
 बनने में जुटा

तियक

मन की योनी
बिल में रहनेवाला की

जो बाहर निकल
प्रकाश और हवा में खेलें
इतना नल्य नहीं

अपने से गहरा अप्रकाश
इस तमस से महातमस

बडना है सर्वाधिक पराक्रम
सह सकना समथ धम

चुहिया

रगीन भावनाओ का पहाड
निकला

सैक्स की चुहिया
पूर्णमा बीत गयी
गरमी मे उबलता सवेरा

नृशस

जीवन की नतिवत्ता

तहस नहस कर

अभी भी मुस्करा रहा है, वामन

आत्म तुष्टियाँ चबा रहा है

आस्थाओं का कोमल मन

विश्वासघात से छेद

अरे पाप डकारते, मोटे

तुझमे उठता ही नहीं खेद

पशु पीटन से ही सीखते

समझ आता ढण्डे खाकर

कीचड़ में डूबता सूखर

आत्मा का स्वरूप चाहिए

यहाँ नृशस हरिजन

अकल्पित

जो मन चाहता है

उसकी ठीक कल्पना भी नहीं हो पाती

भाग्य की दोष क्या देना

वह अकल्पित बात

यदि नहीं होती

घोषा बसन्त

क्या घोषा बसन्त

गा उठेगा एक दिन

अस्वास्थ्य से भारी

यह मन मलग

दिनों की रगड़

चमरा सक्ती

बद मुद्रियों में पाऊँगा

सुगंध की चुटकी

देह में स्थायी थकान

मन में अपाहिज काम

छाती बंदूब की चाँदमारी

अपना जीवन तमाम

छुट्टी हो

फर्जी से छुटाओ
तो सत्य में चर्या हो
कल्पना का भाड़ा फूटे
तो कुछ सच में दीखे

जो बुढ़ियाँ बजा बजा
मुझे नचा रही इच्छाएँ
इनकी ठोली हटे
तो मन कुछ अर्थ सोचे

खालीपन है मन में
सचय का रोग जीवन में
एक से दस भले
खोपड़ी खोलता हूँ
दस जूते खाने

छह अन्धे

छह अन्धे पहिचान आये
आरमा का हाथी—

- स्वास्थ्य और सैक्स सब कुछ है
- जीवन का गुण समाज देता
- कूर अघा खेल चलता
- मृत्युपरात स्वर्ग नरक मिलता
- जम से जम विकास हा रहा
- अणु-युद्ध से सब समाप्त है

पचास

मेरे जीवन का घेरा

रोज़ एकान्ती होता

पाने का द्वार बन्द

देने का खुला

अपने का पकड़ न पाता

अपने से यहाँ न छूटता पीछा

बच जाता यह हर सायकाल

उदासी से साक्षात्कार

किस दिन से गिनू बुढ़ापा

जिस दिन पहली दाढ़ गयी

बाला मे सफेदी दीखने लगी

यह सब बाहरी खटर-पटर

बुढ़ापा उस दिन आ बसा

जब थकाई हो गयी स्थायी

हर्ष-पाथेय

युवावस्था सह सकती थी
घने मायकाल सरीखे दुःख
वय पयत्त प्रेम रोग
उदासी के शिशिर

अब पचास के बाद
जीवन योजना हर रोज़ की
राख चढ़ाई निपटने
हर्ष पाथेय चाहिए

मन

शब्द मुकुर में देखना
कैसा आज चेहरा है
मन का मौसम प्रसन्न उदास
धूप या कोहरा है

चिन्ताओं की चिड़िया
मन चुगती सुबह-भर
कोई मधुर बात मन में आ
इहे नहीं हार्क देती

जरा-से स्वागत से फूला
जरा-सी ठेस से फूटा
इस कातर कोमलता में
कहा आघात
स्थायी हृष का

निर्जीव

बाग में सुबह-सुबह

मेरी खिड़की के आगे

कौए झुण्ड-पर-झुण्ड उतरे

—कौई मृत जानवर था पड़ा ?

—मेरी निर्जीवता का पड़ गया पता

अजमेर

आगे बढ़ने की ट्रेन से
उतार दिया गया हूँ
छोटे स्टेशन में प्रतीक्षा

पुष्प नहीं मेरे इतने
कुछ अपने आप और सुन्दर
मेरे जीवन में हो गुजरे

किशनगढ

पृथ्वी से निबली
नाग रंग की
चट्टानों की पीठ
धूल और साड़ियाँ
जैसे वाद में ईजाद किय
दृष्टि पर आते
कभी-कभी
पेड़ों के झुण्ड

कोटा के जुलाहे

पत्थर की दीवारें
खपरैल की छत
कमरो के बीच
हरे पेड़
बारखानो में होती खटपट
दो मदीं पहले या आज
वही दृश्य

जुलाहो की तेज आँखें
बारीक काम में बीता जीवन
एक ध्यान जैसा है
खींचना ताना फेंकना बाना
इनके मन शांत हुए

गरमी

इतनी गरमी

इमे काटना

तप है

इसम सोच सकना

या प्रफुल्ल रहना

सिद्धि है

बूंदी के रास्ते में

ऐसे चमकदार मोर मिले

भूल गयी सब धूल और गरमी

जेनीवा कृद्य चित्र

[1]

सुबह-सुबह

घर-घर

कार लगी

सड़क घिसने

खींच कर लाये

मालिको को दवान

पार्क में हूगने

[2]

घड़ियों की

शाप विण्डो में शान्कता

कितनी तमयता से

गरीब युवक

[3]

यहाँ के कुत्ते भौंकते नहीं

यहाँ के बच्चे हँसते नहीं ।

ध्यानबद्ध पेड़

एक पीपल जैसा पेड़

बाहर जेनीवा में खड़ा

उसी भारतीय शांति से

ताजता खिड़की के भीतर

पत्तियाँ पीली

निकट में धड़नेवाली

रह जाता शिशिर में

मुख्य इच्छाओं की आवृत्ति

शाश्वत भाग्य है

वही ध्यानबद्ध होना

बस नहीं है सरल

सहना और सहना

नारगी चन्द्रमा

दिल्ली के निक्ट पहुँचे
सध्या के भस्तव पर दीखा
नारगी चन्द्रमा

बस के पैसँजर लवाक रह गये
सौंदर्य इतना बडा
निगला न गया

अजमेर से विदा

अजमेर से विदा
जस चपरासियो ने तुरत
मकान समेट दिया
घक्का पाकर कार चल दी
एक सहयोगी के घर गरम
दूसरे के घर ठण्डा पिया
एक दुख जसा
शब्द टटोलता आगल हुआ

घापिसी—श्राद्ध पश्चात्

आ गये अजमेर के

कथा-कथित पवत

घादल झूमते

निरन्तर झड़ी

सावन का प्रथम दिवस

देह मस्तिष्क

मन में भीतर तक

थकाई है दीघ

अपना भविष्य सुधारना

छटपटा यहाँ से उड़ सकना

नहीं समय

यह नहीं भोग के

बंद दिवस

यह सनिटोरियम सप्ताह

जीवन-मृत्यु का हिसाब

अखबारों से बेखबर

कोई मुझमें करता

निजी परीक्षणफल की प्रतीक्षा

आखिरी दिवस

दिन भर पड़ती घर्षा

बाहर का लान

पानी में डूब गया

—बारिश हो रही है ?

हां, मा !

—अच्छा

फिर आलस बढ़ कर

तुम्हारा सबस्व

जीवन मरण चेष्टा में जुट गया

मृत्यु में जाना

या चप्पा-चप्पा हारना

चारा ओर से बढ़ती बीमारी

एक प्राण का

हारते शरीर से

जितना विरोध हो सके जुटाना

अन्त

सदा चेष्टापूर्ण बजती सास
जो चालीस दिन न थकी
हम नौ को पाल कर
सत्तर बप गरीबी सह
इतनी प्राणवान हिम्मत थी

साचारी है आखिरी खींचतान
तुम तो उदारता में प्रमुख रही

जीवन का घम है
जीवन के अन्त का विरोध
अन्त में
यही बात रहती

माँ

श्राद्ध हुआ और गया
मृत मा की अटकी छाया
शीतल रखती कृपा
उत्पात बचाती
जीवन साधारण ठिगना कुरूप
अपनी वसूलिया करन लगा

मरी माँ मिल गयी
विश्व माता मे
भगवती बच रही
माँ सब की

माँ का आद

उन तेरह दिन

बारिश न हुई सवेरे

रसोइया

बतन माँजनेवाले

कनखल पहुँचाने जीप

हरिराम शर्मा

उपसब्ध हो गये—

कोई कठिनाई न हुई

माँ थी आखिर

कोई कठिनाई न हुई

-

समाधि-लेख

[1]

कोई खुश है कि मैं
 तीर्थ सिंह मारा गया
 खुश होगा कोई और
 उसके मर जाने पर
 मृत्यु का बकाया है
 हम सब पर

[2]

जल गया मास जल गयी अस्थियाँ
 जान-बूझानवाला मे रह गयी
 तुम्हारी भलाई की स्मृतिमा

[3]

छोटी मजु चल बसी
 "दुख मत करना तात
 मानव जीवन मे
 होते ही रहते हैं अभाम्य ।"

चेतावनी

इस घर में रहती थी बुआ
झगडालू बकशा
हल्ला न मचाओ बच्चो
वही लौट आयी, तो ?

यह कमरा था सेठ का
पैसे न बजाओ जेब के

यह खाली कमरा
अच्छा लगता
मेरी दिवंगत पत्नी का

कवियों का अन्त

शायर तो गया
खुदाबन्द के पास
बेटे को मिली

कुछ किताबों की रायल्टी
एक आटे की चक्की

माँखें ऊपर उठा
कहता है बेटा

जैसी खुदा की मर्जी
किताबें मन्दी हुईं
चल रही है चक्की

निराला गया

जहाँ जाते हैं फक्कड़ कवि
जो उससे कतराते रहे
जीवन-भर साहित्यिक लोग
अब निराला के बिस्से सुना
मनाते सविस्तर शोक

निष्कर्ष

मुकित पा गया आखिरकार
बेचारा दुखी भीमिक
उसने भुगती दुनिया ऐसी
वह नहीं लौटेगा कभी

जीवन एक मजाक है
मैं साचता था
अब मातूम हो गया

जीवन-रथा सात महीन की
मरी सुरात
आखिर किसलिए

स्वर्ग की मुसीबत

स्वर्गवाले

निभायेंगे

मीसी

—बचारे

क्या स्वर्ग में घूर घूर

जबड़े देखेगा

दाँत का डाक्टर कपूर

बेचारा यम

यहाँ रहता था जैन मुनि
स्मिधर गया मालूम नहीं
ऊपर स्वर्ग की ओर
सुख और प्रेम वहाँ का सतत
यदि गति हुई निचली
बेचारा यम ।

रामदत्त मास्टर

पहुँचा होगा आप तक
यदि यमराज वहाँ भी
बच्चों की शिक्षा का काम हो
उसे न देना उदाधि

बीज

अरी माभी, अरे माँ
वह बीज ही नहीं
अभी पैड से गिरा

जिससे लकड़ी उगती
जो पालने में लगती
जिसमें बच्चा खेलता
जो मद बनता

मुझे ब्याहने
मुझे बसाने

बादा

जब बाजरी चिबुक तक पहुँचे
मुटटे में दाना पक्कर उमगे

मलाई में आम के टुकड़े
और ताल में स्नूल के लड्डके
तैरने लगें

तब, आ तब, ओ तब
भरे सच्चे प्यार का बादा था—

उस समय के जाने तक
वह जी नहीं सनी कुझारी

मूल

जब मैं छोटा बच्चा था
थोड़ी थी मेरी अकल
बहुत दिन हो गये तब से
अकल वही शकल

न बड़ी, न कभी बढेगी
जीवन अन्त होने तक
जितने दिन जीता हूँ
और मूख हाता हूँ

हितोपदेश

[1]

ससार विपबुद्ध के
दो ही रसयुक्त फल है
काव्यामत का अनुभव
सुजनो से सत्संग

[2]

लघुचित्त गणना करते
अपना-पराया
उदार लोगो के लिए
सारी वसुधा कुटुम्ब है

[3]

इतना अतिथि सत्कार
कम नहीं पढ़ता
सज्जनो के घर
बैठाना, देना जल
मृदुवाणी में स्वागत

नयी दिल्ली

पृथ्वी के पास दिखाने
बुछ नहीं इससे सुंदर
हृदय का कुद होगा वह
जो ऐसे ऐश्वर्यवान, मन—को—छूते—
दृश्य से गुजर जाये

इस समय धारण किया है
नयी दिल्ली
सुबह को सुंदरता वसन की तरह

कभी देखी नहीं, न मन में बसी
शांति ऐसी गहरी
हे भगवान, इमारतों दीर्घ निद्रा में लगती
सारा विशाल हृदय धड़कन शून्य

हितोपदेश

[1]

ससार विपक्ष के
दो ही रसयुक्त फल हैं
काव्यामृत का अनुभव
सुजना से सत्संग

[2]

लघुचित्त गणना करते
अपना-पराया
उदार लोगो के लिए
सारी वसुधा कुटुम्ब है

[3]

इतना अतिथि सत्कार
बम नहीं पड़ता
सज्जनो के घर
घठाना, देना जल
मदुवाणी में स्वागत

शोक के कारण सहस्र

भय के कारण शत

आते हैं दिवस-पर दिवस

मूढ़ को अज्ञात करते

पण्डित का नहीं

[5]

जिसने आशा को छोड़ा

मिराशा का आलम्बन किया

उसी ने पड़ा है—उसी न सुना

उसी ने किया है

[6]

सन्तुष्ट अतः करणवाले को

मिलती सब सम्पत्तियाँ

जिसने जूता पहिना हो

उसे चमड़े से ढकी है पृथ्वी

[7]

क्षुद्र वस्तुएँ भी

समुदाय में

नाय-साधिका बनती

गज को बाँधनेवाली

तुम्हारी बटी रस्सी

हाइकू

फूल ?

इस प्रदेश में
घास भी झूमती

बाँख लगी
छटा

बसंत चला गया

आज तुम भी

नाप रहे हो
शरद चन्द्रमा

शिशिर

चिड़िएँ भी—

और वादल

बुढ़के सगते

मुट्ठी

कोई पूछे मुट्ठी में क्या है
कुछ नहीं, है भी कुछ नहीं
फिर भी मुट्ठी बाँध घूमता हूँ
तुम पूछो तो उत्तर दूँ

तिरपन बप
अनाड़ी बैल ने निभाया
अब शिकार करने आयी
मगे पैर क्षून्यता

—बब्रवास

नसरुद्दीन

[1]

मुल्ला नसरुद्दीन मत बनो
कोई वैभव नहीं हमारे पास
गुटर गू बनकर बैठने को
कभी और कष्ट—

सदा अटपटा—

इसी तरह जीवन चलेगा
कभी सर मत झुकाना
फाइव स्टार व्यवस्था को
सदा नसरुद्दीन उत्तर सुनाना

[2]

बहुत आशा करता हूँ
और इसलिए निराश होता हूँ
हाँ—जैसे दो आँखा की महत्वाकांक्षा
और एक् आँख फूटी होना

[3]

विच्छू, जाडो भ कयो नहीं निकले
—ऐसा क्या मिला हमे वसन्त मे ।

चाणक्य नीति

[1]

एक वृक्ष पर साय बैठे
नाना वण विहगम
प्रभात होते ही
दस दिशाओ मे उड़ जाते
क्या परिवेदना उन्हें

[2]

वैसी ही बुद्धि होती
व्यवसाय वैसा
सहायता उसी तरह की मिलती
जैसी भवितव्यता

[3]

नीचे क्या देखती हो बाला
क्या घरती भ गिर गया
रे, रे मूख, न जानोग
तारुण्य का मोती खो गया

[4]

किस कुल भ दाग नहीं
किस व्याधि ने नहीं सताया
कौन मुसीबि निरन्तर रहा
तु ख किसने नहीं पाया

श्री लाभ

सदा लाभ जिस घर में भूजि
दिन भर खर्च

पर खर्च से दुगना लीटे
सब मुस्कराते मिलें और सुख बढायें
ऐसा घर बसाना चाहता था
सेठ रामपाद—बहता है जेतर
एक कदी की ओर दिखा

भानु का दृष्टिकोण

शकल-पोशाक

बेहूरा गोल है मेरा
घत तेरे की
होता लम्बा सँकरा
शरलक होम्स जैसा

अबकी बार माँ, कृपया
अलग-अलग कपड़े की
हमारी बमीज बनवाना
पहले तो भानु का भाई होना
फिर कपड़ों से पहिचाने जाना

दाल रोटी-सब्जी

दालो की दाल
अरहर की दाल
घीमी जाँच म देर तक पकी

बैदिया फुलका पपाती
इस परिवार की प्रीठा रोटी
इसी खानदान के
भलग मिने जाते
रईस पराठा पूरी
पजाव म बश की शाखा
हुई त दूरी

आलू मधी से बढिया
यदि कोई सब्जी बन जाय
तो वह रसोइए का कमाल है

कड़वा

क्यों लोग चाहते कड़वा
ब्याहते दुखी ककशा

मधुर चाहनेवाला हृदय
पुण्य से मिलता

अपराधी जैसे
सच्चा की ओर बढ़ता
मन्दिर की ओर
बलि का बकरा

शनिश्चरी पर
मँढरा रहे हैं
आजकल भाई साहब

कृपा

न झाड़ू हुआ
न झाड़ू झाड़नेवाला
घूँप में बैठा
न बिताएँ लिखसा
यह भगवान की कृपा

(ऋषान्तर)

कार्टून्स

के राम

बेकाम

जीवन-भर पालतू

अब दीखने लगे

फालतू

ह ह मामा

यह सब जानते हैं

इनकी नज़र से कुछ नहीं बचा

मोटी औरतें

जीन्स पहने

स्त्री स्वतन्त्रता का

एक नमूना

मिसेज चंदावर

जिन्दा दिल

विहस्की गटक

सिगरेट सुलगा

बैठी हैं—मौका तावती

जोर से हँसने

पत्थर

माँ नहलाती थी

एक पत्थर को रोज़

फिर लगाती चदन का टीका

क्या वह शालिग्राम हो सना

शायद नहीं—माँ की सेवा से

मैं ही नहीं बदला

रहा पत्थर जैसा



रात्रि-प्रायना

हे, बाल सखा कृष्ण !
अब मैं जाता हूँ सोने
मेरे मन की गौएँ

रात्रि-भर विचरेंगी वन में
इनकी देख रेख तुम्हारे जिम्मे

